अस्पताल मालिक बिकवा रहे हैं ब्लैक में दवाइयाँ, उनसे पूछताछ क्यों नहीं ?

पकड़े जा रहे हैं अस्पतालों की फ़ार्मेसी में काम करने वाले कर्मचारी

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद: शहर में पुलिस ने हाल ही में रेमडिसिवर जीवनरक्षक दवाओं की ब्लैकमार्केटिंग करने वालों को पकड़कर अपनी पीठ थपथपा ली। लेकिन फ़रीदाबाद पुलिस ने उन अस्पताल मालिकों और मेडिकल स्टोर मालिकों से पूछताछ नहीं कि जिनके यहाँ पकड़े गए आरोपी काम करते थे। ये सब साधारण कर्मचारी हैं। पुलिस ने ये मामले भी उसी तरह दबा दिये, जिस तरह उसने सेक्टर 31 में ऑक्सीजन की कालाबाज़ारी के मामले को दबा दिया।

एशियन और सर्वोदय के मालिकों से पूछताछ क्यों नहीं

पिछले रविवार को पुलिस ने अनखीर चौक से एशियन अस्पताल के चार पुरूष नर्सिंग स्टाफ़ से बीस रेमडिसिवर इंजेक्शन बरामद किए। पुलिस ने आरोप लगाया कि ये लोग तीस हज़ार में एक इंजेक्शन बेच रहे थे। पुलिस ने आरोपियों के नाम संतोष, तपन, लवकुश और ओमप्रकाश बताएं हैं। इसी तरह से पुलिस ने सर्वोदय अस्पताल के फार्मासिस्ट पवन को उसके दो साथियों के साथ सेक्टर 16 से गिरफ़्तार किया गया। पुलिस का बयान है कि ये सभी आरोपी अस्पताल से इंजेक्शन को चुराकर बेचते थे। पहले तो यह जान लीजिए कि एशियन अस्पताल में आने जाने वाले स्टाफ़ की तलाशी होती है। यानी नर्सिंग स्टाफ़ और आफिस स्टाफ़ बिना तलाशी आ-जा नहीं सकता। एशियन अस्पताल के कोने कोने पर। बाउंसर तैनात हैं। अस्पताल का मालिक पद्मश्री प्राप्त डॉक्टर है। जिस अस्पताल में इतनी चुस्त दुरुस्त व्यवस्था हो वहाँ का नर्सिंग स्टाफ़ बीस इंजेक्शनों के साथ पकड़ा जाए, यह पूरी तरह झूठ है। इनके पास से अगर एक-दो इंजेक्शन बरामद हुए होते तो समझा जा सकता था कि वे चुराए गए होंगे। अगर एशियन से चोरी होकर बाहर बीस इंजेक्शन पकड़े जा रहे हों तो इसका मतलब है कि अस्पताल में सुरक्षा नाम की कोई चीज नहीं है और किसी भी मरीज़ का कोई सामान चोरी हो सकता है। बहरहाल, एशियन अस्पताल के मालिक डॉ एन. के. पांडे से पुलिस की पूछताछ तो बनती है।

दूसरी तरफ़ सर्वोदय अस्पताल के जिस शख़्स पवन को पकड़ा गया है, वह फार्मासिस्ट है। उसके पास से चार रेमडिसिवर बरामद हुए हैं। ये लोग भी तीस हज़ार में एक इंजेक्शन बेच रहे थे। सूत्रों का कहना है कि दरअसल इनकी गिरफ़्तारी अस्पताल से हुई है लेकिन अस्पताल के मालिक को बचाने के लिए इनकी गिरफ़्तारी सेक्टर 16 से दिखाई गई है। इस सवाल का क्या जवाब है कि जिसका अपना मेडिकल स्टोर अस्पताल में हो, उसे बाहर जाकर रेमडिसिवर बेचने की क्या ज़रूरत है। इस अस्पताल का मालिक एक सीए है। काफ़ी रसूख़दार सेठ होने की वजह से पुलिस ने फार्मेसिस्ट और उसके गैंग के दो लोगों की गिरफ़्तारी घोषित की है। सर्वोदय के मालिक को भी बख्श दिया गया।

ईएसआई मेडिकल कॉलेज का नाम डुबोया

अपनी सेवा और बेहतर इलाज के लिए नाम कमाने वाले ईएसआई मेडिकल कॉलेज की उसके एक कर्मचारी की वजह से काफ़ी किरकिरी हो रही है। यहाँ के नर्सिंग स्टाफ़ रघुवीर को दिल्ली की न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी पुलिस ने एक ऐसे इंजेक्शन के साथ गिरफ़्तार किया जो वेंटिलेटर पर मरीज़ को लगाया जाता है। इसका नाम टोसलीजुमाप है। यह बाज़ार में आसानी से उपलब्ध नहीं है।

रघुवीर ने मेडिकल कॉलेज से चोरी करके इसे बाहर किसी ग्राहक को चालीस हज़ार रूपये में बेचने की कोशिश की थी लेकिन दिल्ली पुलिस के जाल में फँस गया।रघुवीर के पकड़े जाने से दरअसल ईएसआई मेडिकल कॉलेज फ़रीदाबाद में कुछ नर्सिंग स्टाफ़ द्वारा दवाओं की चोरी का रैकेट उजागर हुआ है। बिना नर्सिंग स्टाफ़ की मिलीभगत यहाँ से कोई भी दवा चोरी नहीं हो सकती। ईएसआई मेडिकल कॉलेज में सारी दवा एक कमेटी के जरिए खरीदी जाती है। फिर डॉक्टर जब इनके लिए लिखते हैं तो वो दवा सीधे नर्सिंग स्टाफ के जरिए मरीज तक पहुंचती है।

नर्सिंग स्टाफ बीच में इस दवा को खुद रख लेते हैं और मरीज के तीमारदार से बाहर से खरीदकर लाने को कहते हैं। वही चोरी की दवा बाजार में जाकर बिकती है। आमतौर पर ऐसे मेडिकल स्टोरों से नर्सिंग स्टाफ का सीधा संपर्क रहता है और दवा मेडिकल स्टोर वाले को औने-पौने दामों पर बेच दी जाती है। लेकिन जब कोरोना फैला तो जीवन रक्षक दवाओं के दाम सबसे पहले मेडिकल स्टोर वालों ने बढ़ाए। जो स्टाफ चोरी करके दवाएं मेडिकल स्टोर पर बेच रहा था, उसने भी ज्यादा कमाने के चक्कर में सीधे ग्राहक तलाश कर उन्हें बेचना शुरू कर दिया। इसके लिए सोशल मीडिया तक का सहारा लिया गया। बहरहाल, ईएसआई मेडिकल कॉलेज को अब अपनी दवा वितरण प्रणाली को और बेहतर करना पड़ेगा। यहां के डॉक्टरों को नजर रखनी होगी कि मरीजों को लिखी गई दवाई स्टोर से उन तक पहुंच रही है या नहीं।

2 दिन में अस्पताल चालू, मरीज आये 4

इसी को तो कहते हैं भाजपाई नौटंकी

फरीदाबाद (म.मो)। सुधी पाठक भूले नहीं होंगे सीएम खट्टर का, दो दिन में अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज चालू करने वाला बयान। दिनांक 25 अप्रेल के इस बयान को खबर लिखते समय पूरे तीन सप्ताह हो चुके हैं, परन्तु छांयसा क्षेत्र के इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आज तक केवल 4 मरीज दाखिल हुए हैं। नाक बचाने के लिए सरकार ने निर्णय लिया है कि कोई भी मरीज यहां सीधे इलाज हेतु नहीं आ सकता। यहां केवल वही आयेगा जिसे बीके अस्पताल से रैफर किया जायेगा, यानी कि मोहना, छांयसा एवं आसपास के ग्रामीण पहले 20-25 किलोमीटर चल कर बीके अस्पताल आकर अपनी ऐसी-तैसी करायें फिर यदि रैफर कर दें तभी वहां इलाज कराने जायें। ये चार मरीज भी बीके अस्पताल से रैफर होकर पहुंचे हैं।

यहां प्रश्न यह पैदा होता है कि इतना बड़ा मेडिकल कॉलेज अस्पताल जिसको चलाने वाली भारतीय सेना, फिर भी वहां सीधे तौर पर मरीज क्यों नहीं जा सकते? जाहिर है इस काम चलाऊ अस्पताल में अभी सारे इन्तजाम आधे-अधूरे हैं। आईसीयू तथा वेंटिलेटर तो हैं ही नहीं ऑक्सीजन का सिस्टम भी चलताऊ का ही है। ऐसे में गंभीर मरीजों को यहां नहीं रखा जा सकता। फिलहाल इसे एक तरह का आईसोलेशन वार्ड कहा जा सकता है।

मजदूर मोर्चा ने 2-8 मई अंक में लिखा था कि यदि ये आगामी तीन सप्ताह में एक भी मरीज यहां भर्ती कर लें तो खट्टर सरकार की बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी, सो जैसे तैसे ही सही सरकार ने चार मरीज भर्ती करके 'बहुत बड़ा कीर्तिमान' स्थापित कर लिया है। इससे ज्यादा की उम्मीद इनसे की भी नहीं जानी चाहिये। दरअसल सरकार का उद्देश्य जनता को स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने की अपेक्षा नौटंकी एवं प्रोपेगंडा करने पर अधिक ध्यान है। इसी के चलते 26 अप्रेल को स्वयं खट्टर यहां आकर फोटो खिंचावकर बयान दे गये जिसे तमाम मीडिया द्वारा प्रचारित कराया गया। उसके बाद जिस राजनीतिक सलाहकार अजय गौड़ की सलाह पर खट्टर जी शासन चला रहे हैं, 8 मई को वे यहां पूरे लाव-लश्कर सहित आ धमके, उसे भी मीडिया द्वारा खूब प्रचारित कराया गया। इतने से भी तसल्ली नहीं हुई तो 10 मई को केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर, मंत्री मूलचंद शर्मा, विधायक नरेन्द्र गुप्ता, सीमा त्रिखा व राजेश नागर आदि के जमावड़े ने वहां हवन करके इस अस्पताल को अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि के तौर पर प्रचारित कराया। कुल मिलाकर मकसद यह कि काम कोई हो न हो, जनता को कोई राहत मिले न मिले परन्तु सत्ता पर काबिज संघियों की तथाकथित उपलब्धि का प्रोपेगंडा पूरी तरह से होना चाहिये।

भाजपा की मातृ संस्था एवं इसको अपने इशारों पर नचाने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का सिद्धांत ही यह है कि जनता के लिये काम करने की कोई जरूरत नहीं है, उस पर खर्च करने की अपेक्षा प्रोपेगंडा पर खर्च किया जाना चाहिये तथा शेष धन को अपने संगठन की ओर धकेल देना चाहिये जिसके बल पर चुनाव जीतने व सत्ता में बने रहने का रास्ता सुगम बना रहे।

समझने वाली बात यह भी है कि खट्टर सरकार ने आज तक भी इस अस्पताल के लिये न तो किसी डाक्टर और न ही किसी अन्य स्टाफ पदों के लिये आवेदन आमंत्रित किये हैं और न ही ऐसी कोई योजना उनके पास है। फौज हमेशा के लिए यहां रहने वाली है नहीं जाहिर है महीने दो महीने बाद उसे यहां से जाना ही है, फिर यहां रह जायेंगे केवल डायरेक्टर पवन गोयल व ज्वांयट डायरेक्टर गुलशन अरोड़ा जो सिवाय वेतन लेने के और कुछ करने की स्थिति में हो नहीं सकते। दरअसल सत्तारूढ़ गिरोह की सोच यह है कि दस-बीस दिन में यह लहर समाप्त हो जायेगी और बात भी आई गयी हो जायेगी। फिर कभी तीसरी लहर आयेगी तब फिर प्रोपेगंडा की नौटंकी शुरू कर दी जायेगी।

भाजपा आईटी सेल गार्जियन के बाद लाया जलजीरा !

आलोक शुक्ला

दो दिन पहले द गार्जियन के फेक वर्जन 'द डेली गार्जियन' नामक फर्जी वेबसाइट पर मोदी की तारीफ वाली आर्टिकल के बाद अब पीएम मोदी के कोविड प्रबंधन की तारीफ करता ये किसी 'जलजीरा' का ट्विट सोशल मीडिया में तेजी से घूम रहा है। कहना न होगा कि ये 'जल जीरा' भी अल जजीरा का फेक वर्जन है जो आईटी सेल ने गढ़ा होगा और जल्दी में अल जजीरा को जल जीरा बना दिया है।

आईटी सेल को किस बात की जल्दी है? कौन सा दबाव है? इस सवाल का जवाब इस तरह से समझा जा सकता है कि आईटी सेल वाले भी काफी मानसिक दबाव में होंगे। एक तरफ भारत के अस्पतालों में जांच, शैया, आक्सीजन, इलाज की भारी कमी से रोजाना बड़ी तादाद में हो रही मौतें, श्मशान घाटों पर लंबी लाइनें, नदियों में तैरती और रेत में दफनाई जाती लाशें और दूसरी तरफ देशी विदेशी मीडिया में 'प्रभुजी' की रोज हो रही थुक्का फजीहत और अब ऊपर से प्रभु की छवि चमकाने का दबाव। ये सब किसी भी भक्त को मानसिक दबाव में लाने के लिये कम नहीं है।

खैर, भक्तों को चाहे जितने मानसिक तनाव में काम करना पड़ रहा हो पर ऐसे तो उनके प्रभु की लानत-मलामत ही ज्यादा हो रही है। अरे भाई अपने प्रभु का चेहरा चमकाओ, इसके लिए चाहे फर्जी वेबसाइट बनाओ या फेक ट्वीटर-फेसबुक अकाऊंट, उसपर फर्जी स्टोरी, कथा कहानी जो चाहे चलाओ पर उस वेबसाइट, ट्वीटर, फेसबुक अकाऊंट का नाम तो असली वाला रख लो, स्पेलिंग तो सही लिख लो।

वैसे एक बात कहूँ, सच ये है कि इन आईटी सेल वालों से अब कुछ भी ठीक नहीं हो सकता। इनके दिमाग में भी कोरोना से हो रही मौतों का खौफ भर गया है जो दिन रात आंखों के सामने नाच रहा है। इन मूर्ख और बदहवास आईटी सेलियों के बूते अब मोदी की छवि नहीं चमक सकती।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421